

जैसा चन्द्र में दाग, वैसी ही मेरी खामियाँ

लेखक: वीनेश अंतानी

अनुवादक: रजनीकान्त एस.शाह

हम 'किन्त्सुगी' की भांति क्षतियों के टुकड़े जोड़कर जीवन को नया ओप दे सकते हैं।

जापान की सुप्रसिद्ध 'टी-सेरिमनी' में उपयोग में लाये जानेवाले काँच या सिरामिक के कप-रकाबी-प्लेट-केतली आदि बरतन टूट जाए या उसमें दरार आ जाए तो उसे फेंका नहीं जाता था। उसे फिर से जोड़कर रिपेर कर दिया जाता है। उसमें से जापान की 'किन्त्सुगी' नामक कला का विकास हुआ। उसमें बरतन में आयी दरार, फाँक, टूटे हुए हिस्से को छिपाते नहीं हैं, परंतु उसे फिर से जोड़कर स्वर्ण, चाँदी, प्लेटिनम के पाउडर से सुशोभित किया जाता है। इस प्रकार टूटी हुई वस्तुएँ नया कलात्मक अवतार धारण करती हैं। इस विचार के मूल में जापानियों का जीवन के प्रति विशिष्ट फलसफा है। उस विचारधारा में मानव मात्र में रही क्षतियाँ, कमियाँ, अपूर्णता को ढांपने के बजाय उसे समझ-सोचकर और सुधारकर जीवन को और सुंदर बनाने का अभिगम है। टूटना और फिर जुड़ना तो मानवजीवन की प्रक्रिया है। हमें अपनी मर्यादाओं से शर्मिंदा होने या हताश होने की जरूरत नहीं है। हम भी 'किन्त्सुगी' की भांति अपनी क्षतियों के टुकड़ों को जोड़कर अपने जीवन को नया ओप दे सकते हैं।

निष्फलताओं से पलायन करने का प्रयत्न अनुचित है। कमियाँ और निष्फलता मानव मात्र से जुड़ा हुआ एक सत्य है। मर्यादाओं को उचित रूप से समझने से सही मार्ग दिखाई देगा। हमारे प्रत्येक अच्छे-बुरे, सुंदर-भदेस पक्ष तथा हमारी हर भूल हमें नयी दिशा की ओर रास्ता दिखा सकती है, मात्र शर्त यही है, कि हम हमारी मर्यादाओं से कुछ सीखने के लिए तत्पर हों। एक व्यक्ति हर एक क्षेत्र में, संबंध में, कारकिर्दगी में विफल हुआ था। उसने स्वयं तलस्पर्शी खोज

करके अपनी कमियों की सूची तैयार की। उसे लगा कि वह उसकी अपनी हर मर्यादा को नामशेष कर सकता है। उसने लिखा, 'मैंने अपनी सारी कमियाँ मेरे अतीत में मुझसे हुई मेरी भूलों के जख्म हैं। मैं अपने घाव भरकर ही रहूँगा।' ऐसे दृढ़ संकल्प के कारण शर्म और अपूर्णता के भाव से वह मुक्त हो सका। उसकी समझ में एक बात आयी, कि उसमें रही मर्यादाएँ जीवन का अंत नहीं हैं, हकीकत में तो हर मर्यादा ऊर्ध्वगमन करनेवाली सीढ़ी का पायदान है।

यदि हम अपने इर्दगिर्द देखेंगे तो पाएंगे कि हम पूर्णरूपेण अपूर्ण एक ऐसी दुनिया में रहते हैं। हर जगह, हर व्यक्ति, हर विचारधारा में, हर नए आविष्कार में, हर रिश्ते में कोई ना कोई कमी तो रही ही होती है। सबकुछ अपूर्ण, इसलिए तो उसे सुधार-संवारकर नया बना सकने की संभावना पैदा होती है। संपूर्णता का आग्रह ही अनुचित है। कमी रहित पूर्णता का खयाल आदर्श के रूप में तो अच्छा है, परंतु अपूर्णता यथार्थ स्थिति है। हर व्यक्ति को पूर्णता के आदर्श और अपूर्णता की वास्तविकता के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए करनट के खेल (अभिनय) करने ही पड़ते हैं। भूल करने की स्वतन्त्रता मनुष्य को प्राप्त अलिखित अनुमति का अनमोल दस्तावेज़ है। अमरीका की सायकोथेरापिस्ट एमी ब्लूम कहती हैं: 'आप अपूर्ण हैं, आपमें कमियाँ हैं, इसलिए तो आप सुंदर व्यक्ति हैं।' किसीने बड़ी सुंदर बात कही है: 'मैं अपनी प्रत्येक मर्यादा, अपूर्णताएँ और कमियों को सभानता के साथ स्वीकार करने का यत्न करता हूँ, फिर भी मुझे मेरा जो भी पक्ष अस्वीकार्य लगे, उससे बिना विचलित हुए, उसे परे रखकर मैं आगे बढ़ता हूँ।'

जरूरत है, कमियों को गले से लगाने की। अभी अभी कुछ नवजवान युवक और युवतियों ने साथ मिलकर 'एंब्रेसिंग माय फ्लोस' नामक सुंदर पुस्तक का प्रकाशन किया है। उसमें से हमें आज की नवजवान पीढ़ी के जीवन के प्रति सकारात्मक अभिगम की समझ प्राप्त होती है। उसका सम्पादन हैदराबाद की होशिका अगरवाल ने किया है। होशिका जी कहती हैं, कि पूर्ण होने का मतलब सुखी या सफल होना नहीं है। जीवन में पैदा हुई अराजक परिस्थितियों से घबड़ाने की जरूरत नहीं है। अंततोगत्वा तो हम अपनी मर्यादाओं का स्वीकार करके अपनेआप से कितना प्यार करते हैं और कैसा जीवन जी रहे हैं उस पर ही सारा मदार है। मास कम्यूनिकेशन के द्वितीय वर्ष में पढ़ रही हलीम कुरेशी कहती हैं: 'हमारे भीतर रही असलामती की भावना, हमारी मानसिक विशृंखलता, चिंताओं को मित्र बनाकर हम अपने प्रति क्रूर हो जाते हैं। कमियाँ ही एकमात्र हमारी पहचान नहीं है।'

कॉलेज के दूसरे वर्ष में पढ़ रही मेरी पोती राशि अंताणी ने चंद्र को संबोधित करके लिखी हुए एक कविता में कहा है: 'तुम में दाग है, तो मुझ में भी है। तुम बढ़ते हो, क्षीण होते हो, बिलकुल दिखाई नहीं देते और पुनः उदित होकर पूर्ण रूप को धारण कर सकते हो। मैं भी तुम्हारा उजास अपने भीतर उतारकर तुम्हारी ही भांति अपने दाग के साथ-अपनी कमियों के साथ-पूर्णरूपेण प्रकाशित होऊंगी।'

अपने दाग, अपनी दरारें, अपने टूटे हुए हिस्सों को फिर से जोड़कर सजना है, जापान के 'किन्त्सुगी' कलाकारों की ही भांति।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें

